

Dhandeshwari Laxmi Tantra

Shri Yogeshwaranand Ji

+919917325788, +919675778193

shaktisadhna@yahoo.com

www.anusthanokarehasya.com

www.baglamukhi.info



**घोर दारिद्र्य-विनाशक-प्रयोग
धन्देश्वरी लक्ष्मी-तंत्र**

{धन्देश्वरी देवी को सुरसुन्दरी, धनदा-यक्षिणी और दारिद्र्य-विनाशक यक्षिणी के नाम से भी जाना जाता है। इनकी साधना करने वाले व्यक्ति को दरिद्रता इस प्रकार नहीं छू सकती, जिस प्रकार सर्पों का विशाल समूह भी गरुड़ को स्पर्श नहीं कर सकता। ये देवी अपने साधक के दारिद्र्य-शमन हेतु स्वयं प्रतिबद्ध हैं और स्वयं ही कहती है कि -‘ जो मुझे नित्य स्मरण करता है, उसकी दरिद्रता मिटाने के लिए मैं कृत-संकल्पित हूँ और दासी के समान उसकी सेवा करती हूँ। वह धनाधिपति हो जाता है, फिर उसके दारिद्र्य की शंका ही कैसी ?’ }

वास्तव में दरिद्रता मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। जंहा दरिद्रता की देवी निवास करती है, वंहा न कोई होम होता है, न कोई त्यौहार होता है और न ही उत्साह होता है। महालक्ष्मी जैसी उच्च कोटि देवी की साधना सम्पन्न कर सिद्धि प्राप्त करना सबके लिए सम्भव नहीं है, और न ही सबको ऐसे मार्गदर्शक की प्राप्ति होनी सम्भव है, जो ऐसी साधनाओं को निर्विघ्न पूर्ण

करा सके। इसीलिए भगवती पार्वती ने लोक-कल्याण की भावना से दारिद्र्य विनाशक एवं समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने वाले इस धनदा-यक्षिणी तंत्र की साधना विधि को प्रकट करने हेतु भगवान आशुतोष से जिज्ञासा प्रकट की थी।

इस तंत्र का प्रकटीकरण परमपिता ब्रह्मा के द्वारा यक्षराज कुबेर के समक्ष सर्वप्रथम किया गया था, जो भगवान शिव और जगन्माता पार्वती के संवाद में स्पष्ट किया गया है। इस साधना की सिद्धि होने पर निश्चय ही साधक धन-धान्यादि समस्त सम्पत्तियों से परिपूर्ण हो जाता है। इस सिद्धि को प्राप्त करने में साधक को समय व श्रम भी अधिक लगाना नहीं पड़ता है, क्योंकि यह विद्या तांत्रिक रीति पर प्रस्तुत की गयी है। ब्रह्मदेव के मुख से प्रतिपादित तथा यक्षराज कुबेर के मुख से जन-जन तक पहुंचने वाली इस विद्या के प्रभाव से निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी श्रेष्ठ तथा धनवान हो जाता है। लेकिन इसके लिए गुरु-दीक्षा प्राप्त करना सबसे प्रथम कर्तव्य है।

मंत्र एवं साधना-विधि :-

साधकों के लिए इस सर्वश्रेष्ठ धनदायी विद्या की प्रस्तुति मैं अपने अनुयायियों के लिए कर रहा हूँ। प्रस्तुतिकरण अत्यन्त ही सरल विधि-विधान के साथ किया जा रहा है। यदि इतने सरल विधि-विधान के उपरान्त भी कोई इस साधना को सम्पन्न न कर सके तो उसे 'अभागा' ही कहा जा सकता है।

मन्त्र:- इस महती धन्देश्वरी का साधना-मंत्र निम्नवत् है:-

ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा ।

यह चौदह अक्षरों वाला मंत्र है, जो सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

साधना-विधि (Sadhana Vidhi)

यंहा साधकों के लिए सर्वाधिक सुफलदायी चतुर्दशाक्षरी मंत्र की विधि प्रस्तुत की जा रही है। फिर भी यदि कोई साधक अन्य किसी मंत्र की साधना में तत्पर हो तो केवल मंत्रवर्णन्यास में ही उसे सूक्ष्म परिवर्तन करना होगा, अन्य समस्त विधि यही होगी।

इस मंत्र का पुरश्चरण एक लाख जप, उसका दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोज, करने के उपरान्त अपने गुरुदेव, माता-पिता, बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद लेने पर पूर्ण होता है। लेकिन यदि रात्रि काल में सात दिनों तक नित्यप्रति एक हजार आठ सौ की संख्या में भी इस मंत्र का जप किया जाये, तो भी मंत्र की सिद्धि हो जाती है।

इस मंत्र का पुरश्चरण आरम्भ करने से तीन दिन पूर्व ही क्षौर आदि कृत्य सम्पन्न कर प्रायश्चित के साथ चन्द्रायण व्रत करना चाहिए। यदि ऐसा करना सम्भव ना हो तो तो प्रायश्चित स्वरूप 'ॐ' का उच्चारण करते हुए पंचगव्य का पान करके उस दिन व्रत रखें और दस हजार गायत्री मंत्र का जप करें तथा अंत में तर्पण करें। गायत्री-विधान इस प्रकार है:-

सर्वप्रथम देशकाल का उच्चारण करे ज्ञात एवं अज्ञात पापों के नाश हेतु एवं किये जाने वाले उक्त धनदा-यक्षिणी प्रयोग के अधिकार-प्राप्ति एवं इस मंत्र की सिद्धि हेतु दस हजार गायत्री मंत्र का संकल्प लें।



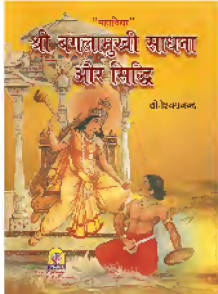
About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788, +919410030994
Email :- shaktisadhna@yahoo.com
Web : www.anusthanokarehasya.com

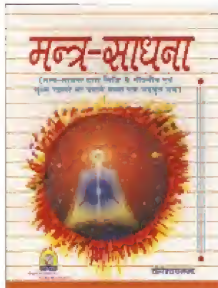
My dear readers! Very soon I am going to start free of Cost E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For

registration email me at shaktisadhna@yahoo.com.
Thanks

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi



2. Mantra Sadhna



3. Shodashi Mahavidya

